प्र० भाषा और बोली की परिभाषा देते हुए इन दोनों में अन्तर स्पष्ट करें।

उ० → बोली और भाषा दोनों ही विचार विनिमय के साधन हैं। फिर भी इन दोनों का स्वरूप अलग-अलग है। इसलिए भाषा और बोली दोनों का स्वतंत्र अस्तित्व है।

बोली जन सामान्य की वाणी है। इसका कोई निश्चित स्वरूप नहीं होता है। यह क्षेत्र, देश, काल के अनुसार बदलती रहती है। यह जनसामान्य के विचारों, भावों को प्रकट करने वाली साधन है, जिसके माध्यम से हम परस्पर में अपनी भावना को अभिव्यक्त करते हैं। हिन्दी भाषा के कुछ विद्वानों ने इसे विचार विनिमय का साधन मानते हुए बतलाया है कि 'बोली' अंग्रेजी के Dialect शब्द के रूप में प्रयुक्त हुआ है। भाषा वैज्ञानिकों ने बोली के लिए विभाषा, उपभाषा या प्रांतीय भाषा का भी प्रयोग किया है।

बोली की परिभाषा

भाषाविद् डॉ० भोलानाथ तिवारी ने बोली की परिभाषा देते हुए बतलाया है, कि "बोली किसी के ऐसे सीमित क्षेत्रीय रूप को कहते हैं, जो ध्वनि, रूप, वाक्य, गठन, अर्थ, शब्द समूह तथा मुहावरे की दृष्टि से उस भाषा के परिनिष्ठित तथा अन्य क्षेत्रीय रूप से भिन्न होता है, किन्तु इतना भिन्न नहीं कि अन्य रूपों के बोलनेवाले इसे समझ न सकें। साथ ही जिसके अपने क्षेत्र में कहीं भी बोलने वालों के उच्चारण रूप; रचना, वाक्य गठन, अर्थ, शब्दसमूह तथा मुहावरों आदि में कोई बहुत स्पष्ट और महत्वपूर्ण भिन्नता नहीं होती।"

डॉ० पी० डी० गुणे ने बोली की परिभाषा देते हुए कहा है, कि – "बोली उन सभी लोगों की बोल-चाल की भाषा का वह मिश्रित रूप है, जिनकी भाषा में पारस्परिक भेद का अनुभव नहीं किया जा सकता है।"

उपर्युक्त परिभाषाओं के विश्लेषण से बोली की निम्नलिखित विशेषताएँ परिलक्षित होती हैं:—

(1) बोली मानव विचार विनिमय का साधन है।
(2) बोली का कोई व्याकरण नहीं होता है।
(3) बोली भाषा का एक सीमित क्षेत्रीय रूप है।
(4) बोली साहित्यिक नहीं होती है।

Scanned by CamScanner

भाषा की परिभाषा :

भाषा का अभिप्राय मानव भाषा से है। यह संस्कृत की 'भाष्' धातु से बना है, जिसका अर्थ है - बोलना या कहना। अर्थात् जिसे बोला जाए, वह भाषा है। भाषा की परिभाषा देते हुए कहा गया है, कि भाषा विचाराभिव्यक्ति का वह साधन है, जिसमें ध्वनियों का व्यवहार किया जाता है। विद्वानों का मानना है, कि भाषा व्यक्ति के ध्वनि संकेतों के द्वारा मानव विचारों की अभिव्यक्ति है। मानव के मुख से निकली हुई प्रत्येक ध्वनि भाषा नहीं कही जाती, केवल सार्थक एवं शब्द निर्माण में समर्थ ध्वनियाँ ही भाषा की परिधि में आती है।

स्वीट के अनुसार - "ध्वन्यात्मक शब्दों द्वारा विचारों को प्रकट करना ही भाषा है।"

डॉ० भोलानाथ तिवारी के अनुसार —
"भाषा मानव उच्चारण अवयवों से उच्चरित यादृच्छिक ध्वनि प्रतीकों की वह संरचनात्मक व्यवस्था है, जिसके द्वारा समाज विशेष के लोग आपस में विचार विनिमय करते हैं।"

उपरोक्त भाषा की परिभाषाओं की निम्नलिखित विशेषताएँ परिलक्षित होती हैं :—

(1) भाषा विचार विनिमय का मानवीय साधन है।
(2) भाषा साहित्यिक होती है।
(3) भाषा की विशेषता यह है, कि इसका विशिष्ट प्रकार का व्याकरण होता है।
(4) भाषा से मनुष्य के व्यक्तित्व, विशिष्टता तथा स्मिता की जानकारी होती है।
(5) भाषा से सामाजिक - व्यक्तित्व, विशिष्टता एवम् स्मिता की जानकारी होती है।

बोली एवं भाषा में अन्तर :—

भाषा और बोली दोनों शब्द वाणी के द्योतक हैं। इन दोनों का गहरा संबंध है। फिर भी इन दोनों का स्वरूप एवं इसकी विशेषताएँ अलग - अलग हैं। अत: इन दोनों में पर्याप्त अन्तर दृष्टिगत होते हैं, जो इस प्रकार हैं—

क्षेत्र की अपेक्षा : क्षेत्र की अपेक्षा बोली और भाषा में अन्तर है। बोली का क्षेत्र सीमित होता है, जबकि भाषा का क्षेत्र बोली की अपेक्षा विस्तृत है।

Scanned by CamScanner

समावेश की अपेक्षा → समावेश की अपेक्षा इन दोनों में अन्तर है। बोली में भाषा का समावेश नहीं होता है, जबकि भाषा में बोली का समावेश होता है अर्थात् बोली के अन्तर्गत भाषा नहीं होती है, जबकि भाषा के अन्तर्गत बोली होती है।

व्याकरण की अपेक्षा → व्याकरण की अपेक्षा इन दोनों में अन्तर है। बोली का कोई व्याकरण नहीं होता है, जबकि भाषा का अपना व्याकरण होता है।

साहित्यिक की अपेक्षा → साहित्यिक की अपेक्षा इन दोनों में अन्तर है, क्योंकि बोली साहित्यिक नहीं होती है, जबकि भाषा साहित्यिक होती है।

वाङ्मयप्रणयन की अपेक्षा : वाङ्मयप्रणयन की अपेक्षा इन दोनों में अन्तर है। बोली में वाङ्मय का प्रणयन नहीं होता है, जबकि भाषा में वाङ्मय का प्रणयन होता है।

रूप, साज-सज्जा के अलंकरण की अपेक्षा → रूप और साज-सज्जा के अलंकरण की अपेक्षा इन दोनों में अन्तर है। बोली रूप, साज-सज्जा से अलंकृत नहीं होती है, जबकि भाषा रूप, साज-सज्जा से अलंकृत होती है।

साहित्य सृजन की अपेक्षा : साहित्य सृजन की अपेक्षा इन दोनों में अन्तर है। बोली में साहित्य का सृजन नहीं होता है, जबकि भाषा में साहित्य का सृजन होता है।

गीत और कथाओं के निबद्ध होने की अपेक्षा : गीत और कथाओं के निबद्ध होने की अपेक्षा इन दोनों में अन्तर है। बोली में केवल लोकगीत तथा लोक कथाएँ निबद्ध होती हैं, जबकि भाषा में सब प्रकार की गीत एवं कथाएँ निबद्ध होती हैं।

अनेकता की अपेक्षा → अनेकता की अपेक्षा इन दोनों में अन्तर है। एक बोली के क्षेत्र में अनेक भाषाएँ नहीं होती हैं, जबकि एक भाषा के क्षेत्र में अनेक बोलियाँ होती हैं।

समझदारी की अपेक्षा : समझदारी की अपेक्षा इन दोनों में अंतर है। एक भाषा की विभिन्न बोलियाँ बोलनेवाले परस्पर में एक दूसरे को समझ लेते हैं, किन्तु विभिन्न भाषाएँ बोलने वाले एक-दूसरे को नहीं समझते हैं।

प्रयोग की अपेक्षा : प्रयोग की अपेक्षा इन दोनों में अन्तर है। भाषा का प्रयोग शिक्षा, शासन, साहित्य-रचना आदि के लिए होता है। जबकि बोली का प्रयोग दैनिक व्यवहार के लिए होता है।

Scanned by CamScanner

<u>ध्वनिग्राम एवं ध्वनि की सदृशता की अपेक्षा</u> : ध्वनिग्राम और ध्वनि की सदृशता की अपेक्षा इन दोनों में अन्तर है। ध्वनिग्राम और ध्वनि में जो अन्तर है, वही अन्तर भाषा और बोली में है। अर्थात् भाषा ध्वनिग्राम के सदृश है, जबकि बोली ध्वनि के सदृश है।

<u>आकृति की अपेक्षा</u> : आकृति की अपेक्षा इन दोनों में पर्याप्त अन्तर है। बोली कोयले के समान खान में पड़े हुए टेढ़े-मेढ़े हीरे के समान आकृति वाली है, जबकि भाषा अंगूठी में जड़ित कंटे-छांटे तराशे हुए हीरे के समान आकृतिवाली है।

निष्कर्षत: यह कहा जा सकता है, कि क्षेत्र की अपेक्षा, समावेश की अपेक्षा, व्याकरण की अपेक्षा, साहित्यिक की अपेक्षा, काव्य प्रणयन की अपेक्षा, गीत और कथाओं के निबद्धता की अपेक्षा, अनेकता की अपेक्षा, समझदारी की अपेक्षा, प्रयोग की अपेक्षा, ध्वनिग्राम और ध्वनि सदृशता की अपेक्षा और आकृति की अपेक्षा इन दोनों में पर्याप्त अन्तर है, परन्तु यह अन्तर भाषा वैज्ञानिक न होकर समाज भाषा वैज्ञानिक है।

Scanned by CamScanner